BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

गुटनिरपेक्ष आंदोलन और उसके बदलते आयाम में भारत की भूमिका

रानी कुमारी
पीएच.डी. शोधार्थी
विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग
बी.बी.एम.के. विश्वविद्यालय धनबाद, झारखंड, भारत

सारांशः

गुटनिरपेक्ष आंदोलन की सैद्धांतिक आधारशिला तटस्थता की संकल्पना पर आधारित है। द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्ति के साथ ही संपूर्ण विश्व द्विध्रुवीय गुटों में बट गया। इसी समयांतराल के दौरान विश्व में एक "तीसरी दुनिया" की अवधारणा के रूप में गुटनिरपेक्ष आंदोलन का प्रादुर्भाव हुआ। इस में विश्व के वे सभी राष्ट्र सम्मिलित हो गए जो ना तो पूंजीवादी खेमे के सदस्य रहे और ना ही साम्यवादी लामबंदी में शामिल हुए। गुटनिरपेक्ष आंदोलन अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने का मंच है, जिसमें सभी सदस्य राज्य अपने स्वतंत्र विदेश नीति का पालन करते हैं। भारत की विदेश नीति प्रारंभ से ही गुटनिरपेक्षता की नीति से प्रेरित रही है, लेकिन वर्तमान परिपेक्ष को देखा जाए तो इसके आयाम में परिवर्तन आया है जो शीत युद्ध की समाप्ति के बाद अंतरराष्ट्रीय राजनीति में आए बदलाव के परिणाम स्वरूप है। वर्तमान समय में कई वैश्विक मुद्दे जैसे पर्यावरण, आतंकवाद, मानवाधिकार, कानून व्यवस्था, शांति, सुरक्षा इत्यादि चुनौतियां इसके समक्ष उपस्थित है जिसके समाधान के लिए सभी राष्ट्र एक साथ कार्य कर रहे हैं। भारत की भूमिका गुटनिरपेक्ष आंदोलन में अहम है, लेकिन समय के साथ ही यह आदर्शवादी निष्क्रियता की अपेक्षा यथार्थवादी सक्रिय गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाते हुए बहुपक्षीयता के मार्ग पर अग्रसर है। वह एक ओर ब्रिक्स और शंघाई संगठन का सदस्य है तो दूसरी और अमेरिका के नेतृत्व वाले चतुर्भुज सुरक्षा संवाद (QUAD) में आस्ट्रेलिया तथा जापान के साथ भी संबंध बनाए है।

कुंजी शब्द : तटस्थता, प्रासंगिकता, बदलता आयाम, राष्ट्रीय हित, विदेश नीति

20वी शताब्दी के उत्तरार्ध ही गुटनिरपेक्ष आंदोलन का उदय हूआ। जो द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद, द्विध्रुवीय अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के साथ जुड़ी हुई है। गुटनिरपेक्षता की परिभाषा के संदर्भ में विचारको में कई मतभेद पाई जाती है। आधुनिक समय में इस नीति की तटस्थता की संकल्पना सर्व उयुक्त उपकरण के रूप में प्रयुक्त किया जा रहा ह। हालांकि पंडित जवाहरलाल नेहरू का यह मानना था कि वर्तमान समय में विश्व युध्दो से तटस्थत नहीं रहा जा सकता, ऐसी स्थिति में गुटनिरपेक्ष देश अगर युद्ध में हिस्सा लेते हैं तो वह राष्ट्रीय हित के अनुरूप है। गुटनिरपेक्ष आंदोलन स्वतंत्र विदेश नीति को अपनाते हुए अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने का एक उपकरण है। भारत ने स्वतंत्र विदेश नीति को अपनाते हुए गुटनिरपेक्ष नीति का प्रयोग अंतरराष्ट्रीय संबंध स्थापित करने में किया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किसी नीति का मुख्य उद्देश्य संपन्न गुटो के बीच शक्ति संतुलन और विश्व शांति की स्थापना करना था, ना की तीसरी शक्ति के रूप में कार्य करना।[1]

भारत प्रारंभ से ही इस नीति का समर्थन करते हुए अंतरराष्ट्रीय मामलों का समाधान शांतिपूर्ण रुप से किया है। भारत की विदेश नीति प्रारंभ से ही शांतिवादी, उदारवादी, गांधीवादी तथा समाजवादी विचारों के परंपरा पर आधारित है, जो साम्यवादी विचारों का विरोध करती है। इसके साथ ही पंडित जवाहरलाल नेहरू ने गुटनिरपेक्षता के नीति को अपना कर शक्ति गुटो की राजनीति से भारत के राष्ट्रीय हित के रक्षा किया है। जवाहरलाल नेहरू ने "गुटनिरपेक्षता" शब्द को परिभाषित 1945 के कोलंबो भाषण में किया साथ ही 1961 में प्रश्न उत्तर सत्र में कहा कि "गुटनिरपेक्षता का अर्थ है किसी भी राष्ट्र के साथ सैन्य गुटबंदी न करना। इसका अर्थ है कि किसी प्रश्न का निर्णय सैनिक दृष्टिकोण से नहीं बल्कि स्वतंत्र रूप से करना तथा अन्य सभी मैत्रीपूर्ण संबंध

@2025 Bihar Shodh Samaagam

कायम करना"।[3] गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सदस्य स्थायी रूप से तटस्थता राज्य की तरह सुरक्षा गुटों से बाहर होते हैं जो किसी द्विपक्षीय संधि, बहुपक्षीय कन्वेंशन तथा "तटस्थ अधिकारों और कर्तव्य" के कानून के तरह कानूनी नहीं है। तटस्थता शब्द गुटनिरपेक्ष से संबंधित होते हुए भी तकनीकी रूप से अलग है। लेकिन तटस्थता शब्द का प्रयोग युद्ध और शांति में राजनीतिक दृष्टि के मानक के रूप में होने से गुटनिरपेक्षता के आधुनिक परिभाषा में इसे शामिल कर सकते हैं।[2]

पृष्ठभूमिः

बर्लिन की दीवार के गिरते ही उसके मलवे में शीत युद्ध समाप्त हो गया। इस दौरान बनी वार्सा संधि भी समाप्त हूई, लेकिन नाटो संगठन अभी भी यूरोपीय राज्य में जीवित है। लेकिन पूर्वी यूरोप तथा पश्चिमी यूरोप के तालमेल के परिणाम स्वरुप इसकी भूमिका में परिवर्तन आया हैं नाटो संगठन के सदस्य देश तत्कालीन समय में राजनीतिक पक्ष पर बल देते हैं ना की सैनिक पक्ष पर। यूरोपीय संघ भी राजनीतिक और आर्थिक इकाई के रूप में संगठित होने का कार्य कर रही है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मास्ट्रिट संधि को 11 देशों ने मान्यता दिए है। अंतरराष्ट्रीय स्तर के कई युद्ध समाप्त हो चुके हैं साथ ही कई राष्ट्र स्वतंत्र हुए हैं। वैश्विक जगत भी एक ध्रुवीय स्वरूप से बहु–केंद्रवादी हो रहा है। लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अमेरिका का वर्चस्व बना हुआ है। रूस का विघटन हो चुका है, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र के सुरक्षा परिषद पर अमेरिका का प्रभाव बना हुआ है। इन परिवर्तनों के साथ समकालीन अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में गुटनिरपेक्ष आंदोलन के आयाम में बदलाव के साथ ही इसके महत्व में भी बदलाव आए है। गुटनिरपेक्ष आंदोलन के कार्य प्रणाली में अप्रत्यक्ष रूप से परिवर्तन हुए हैं, जिससे इसके सदस्य की संख्या भी बढ़ती जा रही है। आंदोलन की आयाम में परिवर्तन बाद भी कुछ उद्देश्य गुटनिरपेक्ष आंदोलन के जन्म के उद्देश्यों के समान ही है जैसे अंतर्राष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण समाधान, स्वतंत्र विदेश नीति, आर्थिक विकास के लिए सहायता प्राप्त करना इत्यादि। गुटनिरपेक्ष आंदोलन कि पूर्व एवं पश्चात सभी समयांतराल में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन के स्थापना की बीज 1955 में बांडुंग सम्मेलन में कंबोडिया के राजकुमार नरोत्तम, इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो, युगोस्लाविया के मार्शल टीटो, भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा मिस्र के राष्ट्रपति कर्नल अब्दुल गमाल नासिर ने बोया था। जो 6 वर्षों के बाद 1961 के बेलग्रेड (युगोस्लाविया) के प्रथम सम्मेलन के रूप में पुष्पित हुआ। जिसमे 25 देशों ने भाग लिया।[3] इस संगठन में 120 सदस्य देश तथा 20 पर्यवेक्षक देश सम्मिलित है। गुटनिरपेक्ष आंदोलन अपने सदस्य देशों को स्वतंत्र विदेश नीति अपनाने की स्वायत्तता देती है ताकि सदस्य राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय स्तर के महाशक्तियों के वैचारिक युद्ध के बीच ना फंसे। वर्तमान समय में गुटनिरपेक्ष आंदोलन अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए अपने आयमो में परिवर्तन कर नवीन अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के रूप में प्रतिस्थापित होने का प्रयास कर रहा है।

विगत वर्षों 1961 से 2024 तक गुटनिरपेक्ष आंदोलन और भारत :

गुटनिरपेक्ष आंदोलन का प्रत्येक तीन वर्षों में शिखर सम्मेलन का आयोजन किया रहा है। इस सम्मेलन के आयोजक देश के राष्ट्रपति अथवा प्रधानमंत्री को अगले तीन वर्षों के लिए इस आंदोलन का अध्यक्ष बनाए जाते हैं। सन् 1961 ने प्रथम शिखर सम्मेलन का आयोजन युगोस्लाविया देश की राजधानी बेलग्रेड किया गया जिसके मुख्य मुद्दे निशस्त्रीकरण, विश्व शांति, सह अस्तित्व इत्यादि वैश्विक मुद्दे रहे। द्वितीय शिखर सम्मेलन मिश्र की राजधानी कहिरा में संन् 1964 में आयोजित हुए जिसमें 46 राष्ट्र ने भाग लिया, इस सम्मेलन में भारत–पाकिस्तान युद्ध तथा इजराइल–अरब विवाद इत्यादि मुद्दे मुख्य रूप से उठाए गए।[4]

गुटनिरपेक्ष आंदोलन के वैचारिक तथा सैद्धांतिक अर्थों में 1971 से 1991 के दशकों में संशोधन हुए, जिसके परिणामस्वरुप कई महाशक्तियों के सैनिक गुट भी गुटनिरपेक्ष आंदोलन में शामिल हो गए। कई सदस्य देश महाशक्तियों से संबंध बनाए हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वतंत्र विदेश नीति का क्रियान्वयन कर रहे हैं। उसी प्रकार भारत दोनों महाशक्तियों से संबंध बनाए हुए,

अन्य गुटनिरपेक्ष देशों से भी अपने सौहार्दपूर्ण संबंध बनाते हुए अपने गुटनिरपेक्षता की स्थिति को धूमिल होने नहीं दिया है। भारत और सोवियत संघ के बीच सन् 1971 में 'मैत्री समझौता' राजनीतिक सहयोग करने के उद्द0श्य से हुए।

1980 के दशक से इस आंदोलन के आस्थिरता के दौर का प्रारंभ होता है जो इस बात से स्पष्ट होता है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सी.टी.बी.टी. के समझौते पर अन्य गुटनिरपेक्ष देशों के द्वारा हस्ताक्षर करने के बावजूद भी भारत तथा कई गुटनिरपेक्ष देशों ने हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। जहां एक ओर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निशस्त्रीकरण तथा परमाणु परीक्षण प्रतिबंधित किए जा रहे थे उसी समय दूसरी ओर भारत परमाणु परीक्षण कर, परमाणु हथियार संपन्न राष्ट्रों में सम्मिलित हो गया।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन के बदलते आयाम और भारत

अंतरराष्ट्रीय राजनीति के गहन अध्ययन करने से यह तथ्य स्पष्ट हुए है कि विश्व राजनीति में समय के परिवर्तन अनुसार कई व्यवस्थाएं समाप्त होती और नई व्यवस्थाओं का प्रारंभ होता है। उसी प्रकार अंतरराष्ट्रीय स्तर की राजनीति के स्वरूप में परिवर्तन आ रहे हैं, पश्चिमी यूरोप राज्यों तथा पूर्वी राज्यों के मध्य–ताल तथा सहयोग बढ़ रहे हैं। जर्मनी का एकीकरण हुआ तथा नामीबिया एक स्वतंत्र राष्ट्र के रुप में अंतर्राष्ट्रीय अस्तित्व प्राप्त कर चुका है। फ्रांस और जर्मनी भी एक साझी सैनिक गुट का गठन कर रहे हैं। यूरोपीय समुदाय (EC) की भूमिका अंतरराष्ट्रीय राजनीति तथा आर्थिक तत्वों की ओर बढ़ता जा रहा है। सोवियत रूस के विघटन के पश्चात एक ध्रुवीयता के विश्व में अमेरिका का प्रभाव भी आगे की ओर अग्रसर है। अपने राष्ट्र की सीमा क्षेत्र में शक्ति व्यवस्था को स्थापित करने में रुस इतना उलझ चुका है की दिनों दिन इसकी वैश्विक राजनीति में भूमिका कम होती जा रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ के सुरक्षा परिषद में भी अमेरिकी प्रभाव का ही दबदबा। इस प्रकार अंतरराष्ट्रीय राजनीति के बदलते आयाम के साथी गुटनिरपेक्ष आंदोलन के आयाम में भी बदलाव आए हैं।

समय के साथ शीत युद्ध के समाप्ति सोवियत संघ के विघटन के साथ 1991 में हुई और उपनिवेशवाद भी धीरे–धीरे समय के साथ समाप्त हो गया। इस प्रकार एक ऐतिहासिक युग की समाप्ति के साथ ही दूसरी ओर नए युग के प्रारंभ का आगाज गुटनिरपेक्ष आंदोलन के आयाम में परिवर्तन के साथ हुआ। जो नवउदित देश को स्वतंत्र विदेश नीति का प्रयोग करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक मंच प्रदान कर रहा है, साथ ही सैनिक गुटों के टकराव की संभावनाओं को रोकता है। विकासशील देशो के शांतिपूर्ण, समानतावादी तथा उज्जवल भविष्य के लिए मार्ग प्रदान कर रहा है जिससे विकासशील राष्ट्र भी इस वैश्विक विकास के दौड़ में विकसित देश के रूप में सह अस्तित्व प्राप्त कर सके।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन की प्रासंगिकता : भारत

21वीं शताब्दी में गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने समयानुसार, परिवर्तनशील व्यावहारिक प्रवृत्ति को अपनाकर अपने सदस्य देशों के मध्य सांस्कृतिक और आर्थिक सहयोग की भावना में वृद्धि की भूमिका का निर्वाह किया। जिससे सदस्य राष्ट्रों के मध्य परस्पर एकता के भाव स्थापित हुए हैं। इस आंदोलन के सम्मेलन में मुख्य मुद्दे राजनीतिक ना होकर अंतरराष्ट्रीय स्तर के आर्थिक सहयोग, वैश्विक संचार की प्रगति, पर्यावरण संकट के निदान और आतंकवाद से निपटारा जैसे केंद्रीय समस्याओं की ओर केंद्रित हुआ है। नई पीढ़ी के वैश्विक नेताओं ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन के आदर्शवादी स्वरूप के स्थान पर यथार्थवादी स्वरूप को अपना कर अपने राष्ट्रहित की पूर्ति इस अंतरराष्ट्रीय मंच के माध्यम से कर रहे हैं। हलाकि भारत की क्रियाशीलता गुटनिरपेक्ष आंदोलन के प्रति प्रारंभिक समय की अपेक्षा कम हुई है। भारत संस्थापक सदस्य होते हुए भी 2016, 2019 तथा 2024 के शिखर सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री इस सम्मेलन में प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित नहीं हुए जिससे इसके प्रासंगिकता पर प्रश्न चिन्ह खड़े होते हैं क्योंकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गुटनिरपेक्ष आंदोलन का उदय शीत युद्ध तथा उपनिवेशवाद के विरुद्ध हुआ था।

लेकिन समय परिवर्तनशील है उसी प्रकार अंतरराष्ट्रीय स्थिति भी स्थिर नहीं रह सकती। इस गत्यात्मक स्थिति के परिणामस्वरुप गुटनिरपेक्ष आंदोलन के उद्देश्यों में भी बदलाव आए हैं, जो यथार्थ के अनुरूप सतत रूप से परिवर्तित हो रहा है। इन तथ्यो से स्पष्ट है कि यह अपनी प्रासंगिकता बनाए हैं क्योंकि यह 100 से अधिक वैश्विक देश का मंच प्रदान करता है जो किसी भी राष्ट्र के लिए, राष्ट्रहित की पूर्ति के लिए अहम है। इस प्रकार गुटनिरपेक्ष आंदोलन के स्वरूप में परिवर्तन जरूर आए हैं लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है, जिसमे निम्न तथ्यों को देखा जा सकता हैं।[5]

- किसी भी सैन्य गुट से निरपेक्ष रहने के सैद्धांतिक अवधारणा को तात्कालिक धर्म के रूप में अपना कर।
- गुटनिरपेक्ष आंदोलन की मानवतावादी दर्शन संपूर्ण मानव जगत के कल्याण के लिए प्रसंगिक है।
- NAM संयुक्त राष्ट्र संघ को सुदृढ़ करने का कार्य करती है, जिससे की अंतरराष्ट्रीय समस्याओं जैसे आतंकवाद, पर्यावरण, संचार, गरीबी और कुपोषण इत्यादि के मुद्दों पर सामूहिक सुरक्षा के आधार पर निर्णय किया जा सके।
- यह संगठन वर्तमान समय में भी राष्ट्रीय हित की अवधारणा पर बल देती है।
- उपनिवेशवाद, प्रजातिवाद तथा शोषण विरोधी विचारधाराएं भारतीय विचारकों के स्थाई विचार रहे हैं, जो गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सैद्धांतिक अवधारणाओं में से एक है जो वैश्विक कल्याण के उद्देश्य से आज भी औचित्य पूर्ण है।
- नव उपनिवेशन शोषण का विरोध तथा दक्षिण दक्षिण सहयोग को बढ़ावा दे क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता को स्थापित करने का कार्य कर रही है।
- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की मांग करती है।
- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकासशील तथा विकसित राष्ट्रों के मध्य सार्थक संबंध स्थापित करती है।
- गुटनिरपेक्ष आंदोलन विश्व शांति की स्थापना के लिए प्रारंभ से वर्तमान समय में भी कार्य कर रही हैं, इसमें भारत की भी भूमिका है।
- राजनीतिक और वैचारिक मतभेद को दूर कर के न्याय संगत विश्व की स्थापना करती हैं।
- विकासशील तथा पिछड़े देशो के लिए एक वैश्विक मंच प्रदान करती है।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन के प्राथमिकताओं तथा कार्यों में शीत युद्ध के पश्चात कइ बदलाव देखने को मिलते हैं। नाम संगठन के अयामो में बदलाव ने समकालीन समय में इसके महत्व को और बढ़ा देता है, जिससे नाम के सदस्य संख्याओं में वृद्धि होती जा रही है। लेकिन इस के साथ ही वैश्विक मंच पर आपसी मतभेद भी उजागर हुए हैं, जिसके कारण कई निर्णयो में आम सहमति नहीं बन पाती है। इसकी लोकप्रियता में वृद्धि होने के कारण समाजवादी देश भी इसके सदस्यता प्राप्त करने के इच्छुक रहते है। विश्व के 120 राष्ट्र की सदस्य संख्या होने के कारण कई राष्ट्र इस मंच का प्रयोग द्विपक्षीय झगड़ों को सुलझाने के लिए करना चाहते हैं। गुटनिरपेक्ष आंदोलन शीत युद्ध की समाप्ति के बाद से नई आर्थिक व्यवस्था को प्राप्त करने, दक्षिण – दक्षिण सहयोग जैसे क्षेत्रीय संगठनों के विकास तथा इस वैश्विक मंच में पास प्रस्ताव को क्रिया अभिमुख करने की दिशा में भी कार्य कर रहा है। कई वैश्विक मुद्दों पर जैसे आतंकवाद, जातीय भेदभाव, हिंसा तथा विकसित देश द्वारा अपनाई जा रहे संरक्षणवादी नीतियों का गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सदस्य राष्ट्र वैश्विक स्तर पर विरोध कर रहे हैं। इस प्रकार आधुनिक समय में नाम आंदोलन अपनी प्राथमिकताओं को प्राप्त करने के लिए कार्य करते हैं। गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सभी संस्थापक सदस्य मिस्र, यूगोस्लाविया, इंडोनेशिया तथा भारत की स्थिति को देखा जाए तो भारत की स्थिति सबसे अच्छी है तथा वह नेतृत्वकर्ता की भूमिका का निर्वाह कर सकता है क्योंकि मिस्र देश की भूमिका काफी सीमित, युगोस्लाविया 1991 में 6 गणराज्य

विखंडित हो चुका है। वर्तमान समय में आतंकवादी गतिविधियों का विरोध करना नाम संगठन का मुख्य लक्ष्य बन गया है। अपने बदलते स्वरूप में गुटनिरपेक्ष आंदोलन अपने सदस्य देशों के आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए विश्व व्यापार संगठन पर अधिक ध्यान केंद्रित कर रहा है।

इस आंदोलन के प्रति भारत के बदलते आयाम :

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सभी राष्ट्र अपने राष्ट्र के हित की पूर्ति के लिए किसी ना किसी आर्थिक संगठन से जुड़ रहे हैं। भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन का सदस्य होते हुए भी अपने आदर्शवादी सिद्धांत की अपेक्षा यथार्थवादिक तथा व्यवहारिक सिद्धांत को अपनाते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने राष्ट्रहित की पूर्ति कर रहा है। भारत के प्रधानमंत्री तथा विदेश मंत्री गुटनिरपेक्ष आंदोलन के शिखर सम्मेलन में भाग लेना जरूरी नहीं समझ रहे है, इस कार्य की पूर्ति का जिम्मा हमारे राष्ट्र के उपराष्ट्रपति को दिया गया। कई विश्लेषकों का मानना है कि भारत इस संगठन को मृतप्राय विरासत मानती है, जिसे सरकार ढोना नहीं चाहती। इस संबंध में कांग्रेस नेता जयराम सारिका6 ने अपने शब्दों में दो–टूक कहा है कि "आज विश्व में गुटनिरपेक्षता की बात बेईमानी हो गई है। यह शिखर सम्मेलन रस्स अदायगी से अधिक कुछ नहीं लगता।" जहां प्रारंभ समय में अंतरराष्ट्रीय विवादों में तटस्थ मध्यस्थता के लिए भारत जैसे गुटनिरपेक्ष देश को आमंत्रित किया जाता था। भारत की रचनात्मक भूमिका अंतरराष्ट्रीय संकटों के निपटारे में होती थी जैसे कांगो में शांति की पुनः स्थापना, हिंदी चीन में संकट तथा कोरिया युद्ध इत्यादि जिसकी कल्पना वर्तमान समय में नहीं की जा सकती।

गुटनिरपेक्ष आंदोलनके प्रति भारत के रुचि में कमी के कारण[7] :–

- एक मत उद्देश्य की कमी – गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सदस्यो में एकमत उद्देश्य की कमी के कारण सदस्य देश आपस में गुटबंदी कर रहे हैं।
- गुटनिरपेक्षता की राजनीति के समर्थक राष्ट्र भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर क्षेत्रीय गुट का निर्माण क्षेत्रीय हितों की पूर्ति के लिए कर रहे हैं।
- आसियान और सार्क जैसे गुट दक्षिण एशिया में सक्रिय है, वहीं दूसरी ओर यूरोपियन यूनियन भी राजनीतिक और आर्थिक प्रतिबद्धता के फलस्वरूप एकीकृत हो रहे हैं।
- पश्चिमी देशों से प्रतिस्पर्धा के कारण भारत और चीन जैसे राष्ट्र के बीच राजनीतिक मतभेद होने के बावजूद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गुटबंदी कर रहे हैं।

हालिया समय में रूस तथा यूक्रेन की युद्ध के संबंध में जब 2022 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने रूस के आक्रमण की निंदा करते हुए प्रस्ताव रखा तो इस महासभा के 141 सदस्य देशों ने समर्थन किया लेकिन भारत और दक्षिण अफ्रीका मतदान के समय अनुपस्थित रह।[8] रूस ने घोषणा किया कि भारत में इसकी तेल बिक्री 22 गुना बढ़ गई है। इस प्रकार रूस भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार देश बन गाया है। इन बातों से स्पष्ट होता है कि भारत अपने राष्ट्रहित की पूर्ति हेतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्य करता है।

निष्कर्ष :

अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शीत युद्ध के प्रतिक्रिया के रूप में गुटनिरपेक्ष आंदोलन का प्रादुर्भाव हुआ। जो समय के अनुरूप अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक सिद्धांत का रूप धारण कर लिया है। शीत युद्ध की समाप्ति के साथ ही इस संगठन के आयाम में कई परिवर्तन आए जिससे इसकी महत्व अंतरराष्ट्रीय राजनीति में बनी हुई है। वर्तमान समय में ऐसे कई वैश्विक परिदृश्य है जिसमें इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है जैसे आतंकवाद, पर्यावरण, निशस्त्रीकरण, विश्व शांति, संचार आर्थिक उपनिवेश इत्यादि।

इस प्रकार गुटनिरपेक्ष आंदोलन के आयाम में भी परिवर्तन आया है। इस बदलते आयाम में सदस्य देशों को एक साथ होकर इस आंदोलन को नई दृष्टिकोण तथा नई संभावनाएं प्रदान करनी होगी।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन वैश्विक शांति की स्थापना के लिए अहम भूमिका का निर्वाह कर रही है। यह संगठन तात्कालिक समय में भी समृद्ध दुनिया की स्थापना को अपना लक्ष्य मान कर, वैश्विक स्तर पर कार्य कर रही है। यह संगठन राष्ट्र के विकास के लिए क्षेत्रीय संप्रभुता तथा अखंडता को भी महत्व देती है, जिससे राष्ट्रों की स्वतंत्रता संरक्षित रहे। गुटनिरपेक्ष आंदोलन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर न्यासंगत विश्व व्यवस्था के स्थापना का कार्य रही है। जिससे राष्ट्रों के मध्य विचारो तथा राजनीतिक मतभेद कम किए जा सके। गुटनिरपेक्ष आंदोलन विकासशील तथा अविकसित देश को एक वैश्विक मंच प्रदान कर रही है।

संदर्भ सूची :

1 मीणा, कैलाश. (2022). *"गुटनिरपेक्षता का अर्थ, सिद्धांत, विकास उदय के कारण."* https://www.kailasheducation.com/2019/12/gutnirpekshta-arth-siddhant-karan.html. Accessed on 18.05.2025

2 लूथी, लोरेंज एम. (2016). *"द नॉन एलाइनमेंट मूवमेंट थे कोल्ड वॉर 1961–1973"*. नेचुरलिटी एंड नॉन एलाइनमेंट इन वर्ल्ड पॉलिटिक्स ड्यूरिंग द कोल्ड वर. प्रकाशक द एम. आई. टी. प्रेस.Journal of Cold War Studies. https://www.jstor.org/stable/e26925635

3 कुमार, महेंद्र. (2024*). "गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM): अर्थ, उद्भव के कारण, उद्देश्य, स्थापना."* https://www.pratiyogitatoday.com/2023/10/gut-nirpeksh-aandolan-nam.html Accessed on 18.05.2025

4 शुक्ला, डॉ. एम. एम. (2016) "गुट निरपेक्षता की नीति की सार्थकता भारत के संबंध में", AV& Publication all right reserved Int. J. Rev. Social Sci. 4(3). *2154-2687 ,* पृष्ठ संख्या *189-192*

5 बिस्वाल, तपन. (2021). *"अंतरराष्ट्रीय संबंध.* ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड." हैदराबाद.

6 पंत, पुष्पेश. (2022). *"21वीं शताब्दी में अंतरराष्ट्रीय संबंध."* एमसी ग्रेव हिल एजुकेशन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड. पृष्ठ संख्या 213

7 पंत, पुष्पेश. (2022). *"21वीं शताब्दी में अंतरराष्ट्रीय संबंध."* एमसी ग्रेव हिल एजुकेशन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड. पृष्ठ संख्या 219.

8 राजन, एम.एस. (1975). *"गुटनिरपेक्षता: भारत एवं भविष्य."* दिल्ली. पृ.सं 33